भवानी तेरे दर को छोड़कर

भवानी तेरे दर को छोड़कर, किस दर को जाऊँ मैं ॥
अब सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं ॥
भवानी तेरे दर को छोड़कर,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

जब से याद भुलाई तेरी, 'लाखों कष्ट उठाएं है ॥
क्या जानूँ इस जीवन में, 'कितने पाप कमाए हैं ॥
अब हूँ शर्मिंदा आपसे, क्या बतलाऊँ मैं
भवानी तेरे दर को छोड़कर,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

तूँ है अम्बे वरों का दाती, 'तुझसे सब वर पाते हैं ॥
ऋषि, मुनि और योगी सारे, 'तेरे ही गुण गाते हैं ॥
अब छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं
भवानी तेरे दर को छोड़कर,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

मेरे पाप कर्म ही तुझसे, 'प्रीति न करने देते हैं ॥
कभी जो चाहूँ तब मिलू आपसे, 'रोक मुझे ये लेते हैं ॥
अब किस विधि दातिए, आपका दर्शन पाऊँ मैं
भवानी तेरे दर को छोड़कर,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

जो बीती सो बीती लेकिन, 'बाकी उमर सँभालूँ मैं ॥
प्रेम पाश में बंधा भवानी, 'भेंट प्रेम की गा लूँ मैं ॥
अब सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं
भवानी तेरे दर को छोड़कर,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

अपलोड कर्ता- अनिल भोपाल बाघीओ वाले

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/6340/title/bhawani-tere-dar-ko-chodkar-kis-dar-jau-ko-jau-main-

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |